उपसंहार

हिन्दी साहित्य के बहुचर्चित साहित्यकार डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। क्योंकि उन्होंने हिन्दी साहित्य में सिर्फ नाटक ही नहीं तो उपन्यास, कहानी, जीवनी, समीक्षा तथा अन्य विधाओं में अपना योगदान दिया है। साथ ही साथ स्वयं लाल एक रंग-निर्देशक, अभिनेता आदि रूपों में भी हमारे सामने आते है। लेखक वास्तव में एक अग्रणी नाटकारों में आते है लेकिन उन्होंने अपने नाटकों में कविता को भी स्थान दिया है अतः स्पष्ट होता है कि उनके हृदय में कवि मन भी पल्लवित तथा पुष्पित हुआ था। स्वयं लेखक को अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पडा था, तथा संघर्ष करते हुए वे अंतीम चोटी पर पहुँच गये। डॉ॰ लाल ने अनेक विधाओं में लेखनी चलायी है। अतः ऐसे लेखक ही मात्रा में पाये जाते है। डॉ॰लाल का सम्पूर्ण लेखन मानवीय यातना और संघर्ष का एक प्रामाणिक दस्तावेज है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत हम कह सकते है कि डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल एक प्रतिभा सम्पन्न लेखक है। उनका व्यक्तित्व एक अष्टपैलू खिलाडी के भाँति है। उन्हें अपने जीवन में प्रारंभ से लेकर संघर्ष करना पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप पूरे साहित्य में संघर्ष पाया जाता है। वे स्पष्ट वक्ता के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होते है। वे एक विकसीनशील एवं प्रयोगशील साहित्यकार के रूप में पाठकों सामने आते है। उन्होंने अनेक-विध विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। उनका जीवनकार तथा राजनैतिक चिंतन भी उभार आता है। उन्होंने अपने नाटकों को रंगमचीय नाटक बनाया, समयपर उनके यथार्थवादी मुक्ताकाशी प्रतीकात्मक मिथकीय लीलानाट्य तथा रंगभूमी के नाटक के नाटक आदि अनेक प्रयोग किए। डॉ॰ लाल का सृजन पक्ष की अपेक्षा रंगदर्शन अधिक सशक्त एवं सराहनीय रहा। रचनाकार लक्ष्मीनारायण लाल की इस रंगयात्रा का रंगदर्शन वास्तव में एक तरफ अगर रंगमंच से रंगभूमि का है तो दूसरी ओर रंगकर्मी से रंगयोगी का भी है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि डॉ॰ लाल कृत "रातरानी " एक समस्यामूलक सामाजिक नाटक है। आलोच्य नाटक में पूँजीपती वर्ग के खिलाफ श्रमिकों का संघर्ष चित्रित होता है। नाटक नायक जयदेव जो पतन की राह अपनाता है, अन्त में अपने झूठे व्यक्तित्व के खो जाने पर पतनोन्मुख मार्गपर चला आता है। वर्तमान समाज में स्थित अनेक समस्याओं का उद्घाटन किया है। इसमें मुख्य कथा के साथ-साथ मालो निरंजन सुंदरम आदि की प्रासंगिक कथाएँ भी चलती है। नाटक के तत्वों के आधार पर प्रस्तुत नाटक खरा

रता है। सभी कारणों का विचार करने पर स्पष्ट होता है कि नाटक का कथानक अत्यंत सुंदर, गतिशाली, कौतुहलवर्धक एवं रोचक बन पड़ा है।

तृतीय अध्याय में निष्कर्षत हम कह सकते हैं कि "रातरानी" मे लगभग १५ मुख्य व गौण पात्र हैं। नाटक में पात्रों का चयन सामाजिक, पारिवारिक पृष्ठभूमि की कसौटी पर किया है। लेखक ने पात्रों की विशेषताओं के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयत्न किया है। आलोच्य नाटक नायिका प्रधान है। वह एक आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। जयदेव मुख्य पात्र है। उसका व्यक्तित्व दोहरा है, तथा वह पूंजीवादी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। नाटक के अंत मे उसका ह्रदय परिवर्तन होता है, उसका व्यक्तित्व उत्थान की ओर अग्रेसर हो जाता है। गौण पात्रो में निरंजन, सुदरम, माली, प्रकाश, योगी आदि पात्रों का समावेश किया गया है। डॉ॰ लाल को पात्र तथा चरित्र-चित्रन में काफी सफलता मिली है। हर एक पात्र अपनी-अपनी भूमिका निभाता हैं तथा अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हैं।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्षत: हम कह सकते है की योजना बनायी है। उक्त नाटक में भावात्मक, आवेशात्मक, नाटकीय, मनोवैज्ञानिक, हस्यव्यंग्यात्मक, गंभीर, व्यावहारिक, तर्कपूर्ण, मार्मिक तथा अलंकारीक संवादों के प्रयोग से भाषा को रोचक, सजीव एवं सार्थक बना दिया है। प्रस्तुत नाटक संवाद योजना की दृष्टी से अत्यंत सफल है। इसके संवाद सामाजिक परिस्थिति को उद्घाटित करते है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत हम कह सकते है कि देश, काल और वातावरण की दृष्टि से "रातरानी" नाटक काफी सफल रहा है। क्योंकि स्वातंत्र्योत्तर काल में जनता अपने मन में तय कर चुकी थी कि अब हम सुखी होंगे लेकिन परिस्थिति विपरित हो जाती है। स्वातंत्र्योत्तर कारखानदारी तथा शोषक- शोषित संघर्ष का बड़ा ही ह्रदयग्राही चित्रण प्रस्तुत नाटक में मिलता है।

भाषाशैली की दृष्टी से लेखक ने प्रभावपूर्ण रोचक एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया हैं। उन्होंने नाटक में शब्दप्रयोगों के विभिन्न रूपों को अपनाया है। भाषा को सौन्दर्य प्रदान करने हेतु विशेषण, उपमानों के साथ - साथ मुहावरें, कहावतों का भी प्रयोग किया है। भाषा के अनेक रूपों के साथ विविध शैलियों को भी अपनाया है। अत: डॉ॰ लाल प्रस्तुत नाटक को भाषाशैली की दृष्टि से सफलता पा चुके हैं।

---३

षष्ट अध्याय में निष्कर्ष: कह सकते हैं कि अभिनय की दृष्टि से एक सफल नाट्य रचना है। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने अभिनय सम्बंधित पर्याप्त रंग-निर्देश दिये हैं। इसमें रूपसज्जा, दृश्यसज्जा विषयक समग्र रंग-संकेत दिये हैं। प्रकाश योजना का प्रयोग अंक तथा दृश्य विभाजन के साथ वातावरण निर्मिति के लिए भी किया हैं। पार्श्वध्वनि और संगीत का सफल प्रयोग किया हैं। आलोच्य नाटक दर्शकीय संवेदना को झंकार देनेवाला तथा दर्शक को प्रभावित करनेवाला हैं। "रातरानी" का प्रथम प्रयोग नाट्य केंद्र इलाहाबाद द्वारा २१ फरवरी, १९६२ को स्वयं डॉ॰लाल के निर्देशन में पॅलेस थियेटर में हुआ। इसप्रकार यह नाटक अभिनय और मंचीयता की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट और सफल नाट्य रचना है।

सप्तम अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि "रातरानी" में वर्तमान परिस्थिति में स्थित अनेकविध समस्याओं के माध्यम से उद्देश्य की पूर्ति की है। उन्होंने आदर्श भारतीय नारी का चित्रण किया है। शोषक-शोषित संघर्ष को उजागर कियाहै, दहेज समस्या, आर्थिक समस्या, हड़ताल समस्या, भूख समस्या, पारिवारिक समस्या आदि को चित्रित किया है। डॉ॰ लाल "रातरानी" में उद्देश्य पूर्ति करने में सफल रहे है।

उपलब्धियाँ

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध की उपलब्धियाँ निम्नलिखित है --

१) डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक सुधारवाद और नैतिक को बढ़ावा देते हैं।

२) डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल का "रातरानी" नाटक पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक अपने वैतिक पतन से उपर उठने की अभिलाषा रखेगा तथा हमेशा नैतिकता को बढ़ावा देगा।

३) प्रस्तुत नाटक की और एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

आलोच्य नाटक पढ़नेवाला संवेदनशील पाठक दहेज का विरोध करेगा तथा जाति-पाँति जैसे आडम्बर पर विश्वास नहीं करेगा।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

डॉ॰ लाल के नाट्य-साहित्यपर निम्नलिखित विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है ---

१) डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का कथ्यगत अनुशीलन।

२) डॉ॰ लाल के नाटकों में नारी पात्र।

३) डॉ॰ लाल के नाटकों में सामाजिक संघर्ष।

४) डॉ॰ लाल के नाटकों में समकालीन समस्याओं मूल्यांकन।